

# वैशेषिक दर्शन

वेदोक्त कर्म समीक्षा

अनुवाद कर्ता: सञ्जय मोहन मित्तल

## Vaisheshika Darshana

A discourse on righteous actions

Translated by: Sañjay Mohan Mittal

सारांश

छठे अध्याय में महर्षि कणाद ने वेदों में प्रतिपादित कर्मों की व्याख्या करते हुए उन्हें मोक्ष प्राप्ति का साधन बताया हैं। प्रथम आह्निक में लौकिक फल देने वाले सामाजिक कर्तव्यों और द्वितीय आह्निक में आत्मिक फल देने वाले कर्मों का उल्लेख है। यम नियमों का पालन करना, क्षत्रिय धर्म का पालन करना, समाज की उन्नति को सर्वोपरि मानना, दुष्टभोजन न करना, दान देख परख कर लेना देना, दुष्ट के साथ मेलजोल व व्यापार न करना, चारों आश्रमों का समयानुसार पालन करना और नित्य यज्ञ करना, यह सब वेदोक्त कर्म सबके लिए अनिवार्य हैं।

प्रथम आह्निक का आरम्भ होता है।

पहले दो सूत्रों में महर्षि वेदों की प्रमाणिकता का परिक्षण करते हैं।

**बुद्धिपूर्वा वाक्यकृतिर्वेदे ॥१॥**

वैशेषिक ६:१:१

बुद्धिपूर्वा । वाक्यकृतिः । वेदे ॥१॥

(वेदे) वेद में (वाक्यकृतिः) वाक्य रचना (बुद्धिपूर्वा) बुद्धिपूर्वक है। वेद का ज्ञान शाश्वत है और इसमें भ्रम की कोई सम्भावना नहीं। यह ईश्वरीय ज्ञान ही धर्म अधर्म के भेद में प्रमाण है।

**ब्राह्मणे संज्ञाकर्म सिद्धिलिङ्गम् ॥२॥**

वैशेषिक ६:१:२

ब्राह्मणे । संज्ञाकर्म । सिद्धिलिङ्गम् ॥२॥

(ब्राह्मणे) ब्राह्मण ग्रन्थों में (संज्ञाकर्म) शब्दों के मूल रूप की विवेचना भी वेदों के बुद्धिपूर्वक व ईश्वरीय होने में (सिद्धिलिङ्गम्) प्रमाण है।

तीसरे और चौथे सूत्रों में महर्षि दान का लेन देन बुद्धिपूर्वक करने का उपदेश देते हैं।

**बुद्धिपूर्वो ददातिः ॥३॥**

वैशेषिक ६:१:३

बुद्धिपूर्वः । ददातिः ॥३॥

वेदों में (ददातिः) दान कर्म (बुद्धिपूर्वः) बुद्धिपूर्वक करने का निर्देश है। पात्र कुपात्र का निर्णय कर सामाजिक हित के लिए दिया गया दान देनेवाले के सुखों को बढ़ाता है।

### Synopsis

In the sixth chapter Maharshi Kaṇāda preaches about the righteous actions propounded in the Vedas and declares them to be the pathway for *mokṣha*. There are two parts (*aahnika*) to this chapter. In the first part the sage discusses one's duties towards the society and the actions that bring visible gains. In the second part he discusses the actions leading to spiritual gains. Abiding by the principles of *yamas* and *niyamas*, fulfilling one's duties as a *kṣhatriya*, giving precedence to the greater good of the society, not partaking in violent food, validating the sources / causes before accepting or giving donation, not keeping personal or business relationships with the brutes, following the rules for all of the four *aashramas* and performing *yajña* regularly, these are Vedic duties mandated for everyone.

Here begins the first *aahnika*.

In the first two sootras the sage examines the validity of the Vedic knowledge.

#### **1. buddhipoorvaa vaakyakṛitirvede.**

Vaisheshika 6:1:1

buddhi-poorvaa vaakya-kṛitiḥ vede.

(*vaakya-kṛitiḥ*) The formation of phrases and sentences (*vede*) in the Vedas (*buddhi-poorvaa*) displays superior intellect. The knowledge contained in the Vedas is eternal and there is no contradiction or confusion in it. Vedas provide a rubric for categorizing the actions as righteous or sinful.

#### **2. braahmaṇe sañjñāakarma siddhilingam.**

Vaisheshika 6:1:2

braahmaṇe sañjñāa-karma siddhi-liṅgam.

(*sañjñāa-karma*) The origins of various words detailed (*braahmaṇe*) in the set of scriptures known as *braahmaṇas* also (*siddhi-liṅgam*) point towards the fact that the language in the Vedas displays superior intellect and that they are of divine origin.

In the third and fourth sootras the sage preaches that donating and accepting donations should be done only after a proper due diligence.

#### **3. buddhipoorvo dadaatiḥ.**

Vaisheshika 6:1:3

buddhipoorvaḥ dadaatiḥ.

The Vedic directive about (*dadaatiḥ*) donations is (*buddhipoorvaḥ*) logical. Vedas advise everyone to be socially responsible and to donate for good causes.

तथा प्रतिग्रहः ॥४॥

वैशेषिक ६:१:४

तथा । प्रतिग्रहः ॥४॥

(तथा) दान देने की भांति (प्रतिग्रहः) दान का लेना भी बुद्धिपूर्वक होना चाहिए । देने वाले के कर्म को परख कर दान लें । यदि दान का धन अधर्म से या वेद निषिद्ध व्यवसाय से कमाया गया हो तो न लें । दान में प्राप्त धन का प्रयोग केवल समाज की उन्नति के लिए करें स्वार्थ के लिए नहीं । पाँचवे सूत्र में महर्षि कर्मफल के आदान प्रदान की असम्भवता पर विचार करते हैं ।

आत्मान्तरगुणानामात्मान्तरेऽकारणत्वात् ॥५॥

वैशेषिक ६:१:५

आत्मान्तरगुणानाम् । आत्मान्तरे । अकारणत्वात् ॥५॥

(आत्मान्तरगुणानाम्) एक आत्मा के गुण और कर्म (आत्मान्तरे) दूसरी आत्मा के लिए (अकारणत्वात्) फल नहीं दे सकते । यज्ञादि का अनुष्ठान स्वयं करें । मन्त्र जाप का पुण्य धन से खरीदा नहीं जा सकता । मृत मनुष्यों के तर्पण के लिए परिवार द्वारा किए श्राद्ध आदि कर्मों के फल मृतक की आत्मा को नहीं मिल सकते ।

छठे और सातवे सूत्रों में महर्षि दुष्ट भोजन के परिणामों पर विचार करते हैं ।

तद् दुष्टभोजने न विद्यते ॥६॥

वैशेषिक ६:१:६

तत् । दुष्टभोजने । न । विद्यते ॥६॥

(दुष्टभोजने) दुष्ट भोजन खाने व खिलाने वाले व्यक्ति के (तत्) यज्ञादि कर्म भी पुण्य फल (न) नहीं (विद्यते) देते ।

दुष्टं हिंसायाम् ॥७॥

वैशेषिक ६:१:७

दुष्टम् । हिंसायाम् ॥७॥

(हिंसायाम्) जीवों की हिंसा कर जो भोजन प्राप्त किया जाए वह भोजन (दुष्टम्) दुष्ट है । वेदों में पशुओं को मारने का निषेध है । मांसाहारी भोजन वेद आज्ञा के विरुद्ध है ।

आठवे और नौवे सूत्रों में महर्षि अधर्मियों और धर्मात्माओं के साथ व्यवहार के फलों में भेद समझाते हैं ।

तस्य समभिव्याहारतो दोषः ॥८॥

वैशेषिक ६:१:८

**4. tathaa pratigrahaḥ.**

Vaisheshika 6:1:4

tathaa pratigrahaḥ.

*(tathaa)* Similar to donating, *(pratigrahaḥ)* accepting donations should also be mindfully done, only after validating the source of the donations. One should avoid the donations of monies or things obtained through ill gotten means and those earned by engaging in trades forbidden in the Vedas. Donations should be used only for the betterment of the society and not for personal indulgence.

In the fifth sootra the sage discusses the impossibility of exchange of spiritual gains between souls.

**5. aatmaantaraguṇaanaamaatmaantare'kaaraṇatvaat.**

Vaisheshika 6:1:5

aatmaantara-guṇaanaam aatmaantare akaaraṇatvaat.

*(guṇaanaam)* The qualities and deeds of *(aatmaantara)* one soul *(akaaraṇatvaat)* do not bear fruits *(aatmaantare)* for another soul. Everyone should engage in prayers and other virtuous actions themselves. The virtue of mantras recited by someone else can't be purchased. Similarly any penance organized for a deceased by their family does not benefit the departed soul.

In the sixth and seventh sootras the sage discusses the consequences of eating animals.

**6. tad duṣṭabhojane na vidyate.**

Vaisheshika 6:1:6

tad duṣṭa-bhojane na vidyate.

*(tat)* The *yajña* etc. performed by a person, who partakes in *(duṣṭa)* brutal *(bhojane)* food or serves it to others, do *(na)* not *(vidyate)* bear fruits.

**7. duṣṭaṁ hinsaayaam.**

Vaisheshika 6:1:7

duṣṭam hinsaayaam.

The food that is obtained *(hinsaayaam)* by killing animals is defined as *(duṣṭam)* brutal food. The Vedas decree against killing animals and hence consuming non-vegetarian food is a violation of the Vedic mandate.

In the eighth and the ninth sootras the sage discusses the differences in the outcome of engagement with the brutes versus the benevolent.

**8. tasya samabhivyaahaarato doṣaḥ.**

Vaisheshika 6:1:8

tasya samabhivyaahaarataḥ doṣaḥ.

तस्य । समभिव्याहारतः । दोषः ॥८॥

(तस्य) उस दुष्ट भोजन को करने वाले मनुष्य के (समभिव्याहारतः) साथ सम्बन्ध रखने या व्यवहार / व्यापार करने से भी समाज में (दोषः) दोष उत्पन्न होता है । दुष्ट निर्भीक हो अन्यो को भी दुष्ट आचरण के लिए प्रोत्साहित करते हैं ।

तददुष्टे न विद्यते ॥९॥

वैशेषिक ६:१:९

तत् । अदुष्टे । न । विद्यते ॥९॥

(तत्) यह दोष (अदुष्टे) दोष रहित कर्मों को करने वालों के साथ व्यवहार करने पर (न) नहीं (विद्यते) होता ।

दसवे सूत्र में महर्षि भूल सुधार के विषय में कहते हैं ।

पुनर्विशिष्टे प्रवृत्तिः ॥१०॥

वैशेषिक ६:१:१०

पुनः । विशिष्टे । प्रवृत्तिः ॥१०॥

मनुष्य को सदैव (विशिष्टे) सात्विक (प्रवृत्तिः) प्रवृत्ति रख धर्मानुसार कर्म और व्यवहार में लिप्त रहना चाहिए । यदि अनजाने में या परिस्थितियों के वश दुष्ट भोजन या दुष्टों से व्यवहार हो जाए तो उसे त्यागकर (पुनः) पुनः अतिशीघ्र धार्मिक आचरण की ओर आ जाना चाहिए ।

ग्यारहवे सूत्र में महर्षि सात्विक भोजन की उपलब्धता या अनुकूलता न होने पर विकल्प बताते हैं ।

समे हीने वा प्रवृत्तिः ॥११॥

वैशेषिक ६:१:११

समे । हीने । वा । प्रवृत्तिः ॥११॥

पूर्णतया सात्विक भोजन में असमर्थ होने पर (समे) सम (सात्विक व राजसिक का मिश्रण) (वा) अथवा (हीने) हीन (राजसिक) भोजन (प्रवृत्तिः) करें परन्तु हीनतर तामसिक भोजन कभी न करें ।

बारहवे सूत्र में महर्षि अन्य मनुष्यों से व्यवहार के विषय में पुनः कहते हैं ।

एतेन हीनसमविशिष्टधार्मिकेभ्यः परस्वादानं व्याख्यातम् ॥१२॥

वैशेषिक ६:१:१२

एतेन । हीनसमविशिष्टधार्मिकेभ्यः । परस्वादानम् । व्याख्यातम् ॥१२॥

## Vaisheshika Darshana - Chapter 6

Tolerating (*tasya*) brutes or (*samabhivyaahaarataḥ*) maintaining relationships with them, either at personal level or for business, causes (*doṣhaḥ*) a tumor in the society. Emboldened, the brutes try to lure others in unrighteous and brutal behavior as well.

### 9. tadaduṣṭe na vidyate.

Vaisheshika 6:1:9

tat aduṣṭe na vidyate.

(*tat*) This problem (*na*) does not (*vidyate*) exist when we engage with (*aduṣṭe*) people free from unrighteous conduct.

In the tenth sootra the sage advises to get back on track in case of any deviations.

### 10. punarvishiṣṭe pravṛtitiḥ.

Vaisheshika 6:1:10

punaḥ vishiṣṭe pravṛtitiḥ.

Each and every human should consistently maintain (*vishiṣṭe*) righteous (*pravṛtitiḥ*) tendencies, partake in *saatvik* food and engage in righteous conduct. If out of ignorance or due to circumstances one deviates and partakes in brutal food or engages with the unrighteous, he/she should (*punaḥ*) again come back on the righteous path as soon as possible.

In the eleventh sootra the sage discusses the course when *saatvik* food is not easily available.

### 11. same heene vaa pravṛtitiḥ.

Vaisheshika 6:1:11

same heene vaa pravṛtitiḥ.

When *saatvik* food is not available, one can (*pravṛtitiḥ*) think of consuming (*same*) a mix of *saatvik* and *raajasik* food (*vaa*) or just (*heene*) *raajasik* food alone, but never the violent *taamasik* food.

In the twelfth sootra the sage again talks about interaction with other people.

### 12. etena heenasamavishiṣṭadhaarmikebhyaḥ parasvaadaanam vyaakhyaatam.

Vaisheshika 6:1:12

etena heenasamavishiṣṭadhaarmikebhyaḥ parasvaadaanam vyaakhyaatam.

(एतेन) इसी प्रकार (हीनसमविशिष्टधार्मिकेभ्यः) विशिष्ट, सम और हीन धर्म वाले मनुष्यों से (परस्वादानम्) व्यवहार करना व दान लेना (व्याख्यातम्) उचित समझना चाहिए परन्तु हीनतर अधार्मिकों से कदापि नहीं।

तेरहवे सूत्र में महर्षि वेद विरुद्ध आचरण के त्याग का उपदेश देते हैं।

**तथा विरुद्धानां त्यागः ॥१३॥**

वैशेषिक ६:१:१३

तथा । विरुद्धानाम् । त्यागः ॥१३॥

(तथा) इसी प्रकार अधार्मिक से दान और अन्य व्यवहार की भांति अपने आचरण से भी (विरुद्धानाम्) वेद विरुद्ध कर्मों का पूर्णतया (त्यागः) त्याग करें।

चौदहवे, पन्द्रहवे और सोलहवे सूत्रों में महर्षि क्षत्रिय धर्म की व्याख्या करते हैं।

**हीने परे त्यागः ॥१४॥**

वैशेषिक ६:१:१४

हीने । परे । त्यागः ॥१४॥

क्षत्रिय अपने से (हीने) कमजोर, निहत्थे व घायल (परे) शत्रु को (त्यागः) छोड़ दे और उसपर वार न करे। मनुस्मृति के अनुसार शत्रु यदि आततायी हो तो उसे बिना ज्यादा सोच विचार के मार देना चाहिए।

**समे आत्मत्यागः परत्यागो वा ॥१५॥**

वैशेषिक ६:१:१५

समे । आत्मत्यागः । परत्यागः । वा ॥१५॥

क्षत्रिय अपने से (समे) समान क्षमता और बल वाले शत्रु के साथ युद्ध कर (परत्यागः) उसके प्राण हर लें (वा) या (आत्मत्यागः) अपने प्राण त्याग दें।

**विशिष्टे आत्मत्यागः ॥१६॥**

वैशेषिक ६:१:१६

विशिष्टे । आत्मत्यागः ॥१६॥

क्षत्रिय अपने से (विशिष्टे) अधिक क्षमता और बल वाले शत्रु के साथ युद्ध कर (आत्मत्यागः) अपने प्राण त्याग दें परन्तु युद्ध से पीछे न हटें। सामान्य नागरिकों के लिए भी सामाजिक हित में अपने से विशिष्ट व्यक्ति की रक्षा के लिए अपने स्वार्थ का बलिदान करना उचित है।

प्रथम आह्निक समाप्त हुआ।



## Vaisheshika Darshana - Chapter 6

(etena) Similarly, (parasvaadaanam) engagements and donations (vyaakhyaatam) should be considered when interacted with or received (heenasaavishishṭadhaarmikebhyaḥ) from people with pure, mixed or mediocre tendencies. However, engagement with or donations from brutes should be avoided at all times.

In the thirteenth sootra the sage advises to relinquish all behaviors that contradict the teachings of the Vedas.

### 13. tathaa viruddhaanaan tyaagaḥ.

Vaisheshika 6:1:13

tathaa viruddhaanaam tyaagaḥ.

(tathaa) Similarly, along with the engagements with brutes, (tyagaḥ) remove from yourself, all behaviors and actions that are (viruddhaanaam) contrary to the Vedic teachings.

In the fourteenth, fifteenth and sixteenth sootras the sage discusses the duties of the warriors.

### 14. heene pare tyaagaḥ.

Vaisheshika 6:1:14

heene pare tyaagaḥ.

Warriors should (tyagaḥ) spare their (pare) enemies, if they are (heene) weak, unarmed or hurt. However, Manusmṛiti states that if the enemy is an oppressor or is unethical then he/she should be slayed without much consideration.

### 15. same aatmatyaagaḥ paratyaago vaa.

Vaisheshika 6:1:15

same aatma-tyagaḥ para-tyagaḥ vaa.

Warriors when facing an enemy of (same) equal caliber and strength should fight and either (para-tyagaḥ) slay their enemy (vaa) or (aatma-tyagaḥ) sacrifice themselves.

### 16. vishishṭe aatmatyaagaḥ.

Vaisheshika 6:1:16

vishishṭe aatmatyaagaḥ.

Warriors when facing with (vishishṭe) a stronger enemy should (aatmatyaagaḥ) sacrifice themselves while fighting and not run away. All human beings should sacrifice their own interest for the protection of a greater cause or an individual of greater capabilities in the interest of the society.

Here ends the first aahnika.

## वैशेषिक दर्शन - अध्याय ६

द्वितीय आह्निक का आरम्भ होता है।

प्रथम सूत्र में महर्षि प्रत्येक कर्म का कर्मफल होने का विधान कहते हैं।

**दृष्टादृष्टप्रयोजनानां दृष्टाभावे प्रयोजनमभ्युदयाय ॥१॥**

वैशेषिक ६:२:१

दृष्टादृष्टप्रयोजनानाम् । दृष्टाभावे । प्रयोजनम् । अभ्युदयाय ॥१॥

(दृष्टादृष्टप्रयोजनानाम्) लौकिक व अलौकिक फलों की इच्छा से किए गए वैदिक कर्मों के (दृष्टाभावे) लौकिक फल न मिलने पर उनको (अभ्युदयाय) कल्याण के लिए किए गए (प्रयोजनम्) कर्म जानना चाहिए। वह कभी व्यर्थ नहीं जाते। पाप कर्मों के फल भी कभी न कभी अवश्य मिलते हैं।

दूसरे सूत्र में महर्षि वैदिक कर्मों का निरूपण करते हैं।

**अभिषेचनोपवासब्रह्मचर्यगुरुकुलवासवानप्रस्थयज्ञदानप्रोक्षणदिङ्नक्षत्रमन्त्रकाल-  
नियमाश्चादृष्टाय ॥२॥**

वैशेषिक ६:२:२

अभिषेचन-उपवास-ब्रह्मचर्य-गुरुकुलवास-वानप्रस्थ-यज्ञ-दान-प्रोक्षण-दिक्-नक्षत्र-मन्त्र-काल-नियमाः । च ।  
अदृष्टाय ॥२॥

(अभिषेचन) नित्य स्नान, (उपवास) नियमित अन्तराल से कुछ समय के लिए भोजन का त्याग, (ब्रह्मचर्य) इन्द्रिय को संयम में रखना, (गुरुकुलवास) विद्या अध्ययन के लिए गुरुकुल में रहना, (वानप्रस्थ) समयानुसार चारों आश्रमों का पालन करना, (यज्ञ) नियमित अग्निहोत्र व अन्य यज्ञ, (दान) यथाशक्ति दान, यज्ञ में (प्रोक्षण) शुद्धता, (दिक्) दिशा, (नक्षत्र) नक्षत्र, (मन्त्र) मन्त्र व (काल) काल का ध्यान रखना, और (नियमाः) सामाजिक नियमों का पालन करना आदि से (अदृष्टाय) अदृष्ट (च) और लौकिक दोनों प्रकार के परिणाम मिलते हैं।

तीसरे और चौथे सूत्रों में महर्षि कर्म में निहित भावना के महत्त्व का वर्णन करते हैं।

**चातुराश्रम्यमुपधा अनुपधाश्च ॥३॥**

वैशेषिक ६:२:३

चातुराश्रम्यम् । उपधाः । अनुपधाः । च ॥३॥

(चातुराश्रम्यम्) चारों आश्रमों में किए गए कर्म (उपधाः) उपधा (च) और (अनुपधाः) अनुपधा के मिश्रण के अनुपात के अनुसार फल देते हैं।

**भावदोष उपधाऽदोषोऽनुपधा ॥४॥**

वैशेषिक ६:२:४

भावदोषः । उपधा । अदोषः । अनुपधा ॥४॥

## Vaisheshika Darshana - Chapter 6

The second *aahnika* begins.

In the first sootra the sage declares that all actions bear fruits and none is wasted.

### 1. **dṛiṣṭāadṛiṣṭāprayojanaanaan dṛiṣṭāabhaave prayojanamabhyudayaaya.**

Vaisheshika 6:2:1

dṛiṣṭā-adṛiṣṭā-prayojanaanaam dṛiṣṭā-abhaave prayojanam abhyudayaaya.

**Rituals and actions performed in accordance with the Vedic teachings may be (*dṛiṣṭā-adṛiṣṭā-prayojanaanaam*) for visible gains or for spiritual gains. (*dṛiṣṭā-abhaave*) In absence of any visible benefits, they should be considered done (*prayojanam*) for (*abhyudayaaya*) spiritual gains. They are never wasted. Sooner or later the punishments for the sinful deeds materialize as well.**

In the second sootra the sage discusses the actions and duties mandated in the Vedas.

### 2. **abhiṣhechanopavaasabrahmacharyyagurukulavaasavaanaprastha- yajñadaanaprokṣhaṇadīnnakṣhatramantrakaalaniyamaash- chaadṛiṣṭāaya.**

Vaisheshika 6:2:2

abhiṣhechana-upavaasa-brahmacharyya-gurukulavaasa-vaanaprastha-yajña-daana-prokṣhaṇa-dik-nakṣhatra-mantra-kaala-niyamaaḥ cha adṛiṣṭāaya.

(*abhiṣhechana*) **Regular bath, (*upavaasa*) fasting at regular intervals, (*brahmacharyya*) curbing the sexual desire, (*gurukulavaasa*) residing at the hostel for studies, (*vaanaprastha*) timely following the four aashramas, (*yajña*) routine yajña, (*daana*) donating for good causes, watching the importance of (*prokṣhaṇa*) purity, (*dik*) directions, (*nakṣhatra*) stars, (*mantra*) mantra and (*kaala*) time while performing yajña, and (*niyamaaḥ*) abiding to the rules of the society, these activities bring both visible (*cha*) and (*adṛiṣṭāaya*) spirituals gain.**

In the third and fourth sootras the sage discusses the significance of intentions behind the actions.

### 3. **chaaturaashramyamupadhaa anupadhaashcha.**

Vaisheshika 6:2:3

chaaturaashramyam upadhaaḥ anupadhaaḥ cha.

**The deeds and actions performed (*chaaturaashramyam*) during all of the four aashramas bear fruits based on the proportional mix of the intensity of (*upadhaaḥ*) desire (*cha*) and (*anupadhaaḥ*) benevolence involved.**

### 4. **bhaavadoṣha upadhaa'doṣho'nupadhaa.**

Vaisheshika 6:2:4

bhaavadoṣhaḥ upadhaa doṣhaḥ anupadhaa.

(भावदोषः) भावना में राग, द्वेष आदि दोषों का होना (उपधा) उपधा है और इन (अदोषः) दोषों के विपरीत विद्या, श्रद्धा व लोक कल्याण आदि की भावना का होना (अनुपधा) अनुपधा है।

पाँचवे, छठे और सातवे सूत्रों में महर्षि पवित्र और अपवित्र का भेद बताते हैं।

**यदिष्टरूपरसगन्धस्पर्शं प्रोक्षितमभ्युक्षितं च तच्छुचि ॥५॥**

वैशेषिक ६:२:५

यत् । इष्टरूपरसगन्धस्पर्शम् । प्रोक्षितम् । अभ्युक्षितम् । च । तत् । शुचि ॥५॥

(यत्) जो वस्तु (इष्टरूपरसगन्धस्पर्शम्) इच्छित रूप, रस, गन्ध और स्पर्श वाली है, (प्रोक्षितम्) अपने पुरुषार्थ से अर्जित है (च) और (अभ्युक्षितम्) समाज में स्वीकृत है, (तत्) वह (शुचि) पवित्र है।

**अशुचीति शुचिप्रतिषेधः ॥६॥**

वैशेषिक ६:२:६

अशुचि । इति । शुचिप्रतिषेधः ॥६॥

जो वस्तु पिछले सूत्र में दिए गए मापदण्ड के अनुसार (शुचिप्रतिषेधः) पवित्र नहीं है (इति) वह (अशुचि) अपवित्र और अग्रहणीय है।

**अर्थान्तरञ्च ॥७॥**

वैशेषिक ६:२:७

अर्थान्तरम् । च ॥७॥

(च) और इसके अतिरिक्त यदि कोई वस्तु पाँचवे सूत्र के मापदण्ड से ठीक है परन्तु व्यक्ति के (अर्थान्तरम्) आश्रम के अनुकूल नहीं है, वह भी त्याज्य है। जैसे ब्रह्मचर्य, वानप्रस्थ, संन्यास आश्रम में रेशमी वस्त्र पहनना।

आठवे सूत्र में महर्षि यमों और नियमों के महत्त्व पर चर्चा करते हैं।

**अयतस्य शुचिभोजनादभ्युदयो न विद्यते नियमाभावात् ॥८॥**

वैशेषिक ६:२:८

अयतस्य । शुचिभोजनात् । अभ्युदयः । न । विद्यते । नियमाभावात् ॥८॥

अहिंसा, सत्य, अस्तेय, ब्रह्मचर्य तथा अपरिग्रह, इन पाँच (अयतस्य) यमों का पालन न करने वाला व्यक्ति के लिए (शुचिभोजनात्) पवित्र भोजन करने पर भी कर्मों के (अभ्युदयः) लौकिक व अदृष्ट फल (न) नहीं (विद्यते) मिलते क्योंकि यमों से दूर व्यक्ति शौच, सन्तोष, तप, स्वाध्याय तथा ईश्वर प्रणिधान के (नियमाभावात्) नियमों से भी दूर होता है। यमों और नियमों का पालन प्रत्येक आर्य के लिए नितान्त आवश्यक है।

## Vaisheshika Darshana - Chapter 6

(*bhaavadoṣhaḥ*) Tendencies influenced by vices like attachment, desire, jealousy etc. are (*upadhaa*) classified as negative. On the contrary, the tendencies that are (*adoṣhaḥ*) free from vices and are based on knowledge, serving attitude and a desire for greater good of society are (*anupadhaa*) called positive.

In the fifth, sixth and seventh sootras the sage discusses the difference between the sanctified and the unsanctified.

### 5. yadiṣṭārooparasagandhasparsham prokṣhitamabhyukṣhitañ cha tachchuchi. Vaisheshika 6:2:5

yat iṣṭā-roopa-rasa-gandha-sparsham prokṣhitam abhyukṣhitam cha tat shuchi.

(*yat*) Those things that have (*iṣṭā*) desired (*roopa*) beauty, (*rasa*) taste, (*gandha*) smell and (*sparsham*) feel, are (*prokṣhitam*) obtained from one's own labor (*cha*) and (*abhyukṣhitam*) are universally accepted in the society (*tat*) are (*shuchi*) pure and worthy of possession and consumption.

### 6. ashucheeti shuchipratishedhaḥ. Vaisheshika 6:2:6

ashuchi iti shuchi-pratishedhaḥ.

Those things that (*shuchi-pratishedhaḥ*) do not meet the criteria of purity given in the last sootra (*iti*) are (*ashuchi*) impure.

### 7. arthaantarañcha. Vaisheshika 6:2:7

arthaantaram cha.

(*cha*) And while meeting the criteria in the fifth sootra, if something is (*arthaantaram*) not in accordance with the *aashrama* of the person, it should not be used. For example, wearing fashionable clothes during *brahmacharya*, *vaanaprastha* and *sannyasa aashramas* is not advisable.

In the eighth sootra the sage discusses the importance of *yamas* and *niyamas*.

### 8. ayatasya shuchibhojanaadabhyudayo na vidyate niyamaabhaavaat. Vaisheshika 6:2:8

ayatasya shuchi-bhojanaat abhyudayaḥ na vidyate niyama-abhaavaat.

An individual devoid (*ayatasya*) of the five *yamas* of non-violence, truth, free from theivery, curbing sexual desires and not hoarding is also (*niyama-abhaavaat*) far removed from the five *niyamas* of purity, contentment, penance, search of knowledge and meditation. Such a person, even when he/she (*shuchi-bhojanaat*) consumes pure food, (*na*) does not (*vidyate*) experience the expected (*abhyudayaḥ*) visible or spiritual gains. Following *yamas* and *niyamas* are very important for all humans.

नौवे और दसवे सूत्रों में महर्षि आपातकाल और सामान्य काल के नियमों का वर्णन करते हैं।

**विद्यते वाऽर्थान्तरत्वाद् यमस्य ॥९॥**

वैशेषिक ६:२:९

विद्यते। वा। अर्थान्तरत्वात्। यमस्य ॥९॥

(अर्थान्तरत्वात्) युद्ध जैसे आपातकाल में यम नियमों का पालन न होने पर भी पवित्र भोजन करने का फल मिल (विद्यते) जाता है (वा) क्योंकि ऐसे समय में (यमस्य) यम नियमों का त्याग केवल समाज की भलाई के लिए किया जाता है।

**असति चाभावात् ॥१०॥**

वैशेषिक ६:२:१०

असति। च। अभावात् ॥१०॥

सामान्य काल में (असति) यमों का पालन न करने पर पवित्र भोजन करना (च) भी (अभावात्) सम्भव नहीं है इसलिए उनके बिना कल्याण सम्भव नहीं है।

ग्यारहवे, बारहवे, तेरहवे और चौदहवे सूत्रों में महर्षि राग उत्पन्न होने के कारणों पर विचार करते हैं।

**सुखाद् रागः ॥११॥**

वैशेषिक ६:२:११

सुखात्। रागः ॥११॥

(सुखात्) सुख का अनुभव करने पर सुखों के साधनों के प्रति (रागः) राग उत्पन्न होता है। वैसे ही दुःख देने वाले साधनों के प्रति द्वेष उत्पन्न होता है।

**तन्मयत्वाच्च ॥१२॥**

वैशेषिक ६:२:१२

तन्मयत्वात्। च ॥१२॥

बार बार सुख दुःख का अनुभव करने से उनके संस्कार और दृढ़ होते हैं। इन (तन्मयत्वात्) संस्कारों की दृढ़ता से राग द्वेष भी (च) और अधिक बढ़ता है।

**अदृष्टाच्च ॥१३॥**

वैशेषिक ६:२:१३

अदृष्टात्। च ॥१३॥

(च) और (अदृष्टात्) पूर्व जन्म के संस्कारों से भी राग द्वेष उत्पन्न होता है।

**जातिविशेषाच्च ॥१४॥**

वैशेषिक ६:२:१४

जातिविशेषात्। च ॥१४॥

## Vaisheshika Darshana - Chapter 6

In the ninth and tenth sootras the sage discusses the relaxation in rules in the event of an emergency.

### 9. vidyate vaa'rthaantaratvaad yamasya.

Vaisheshika 6:2:9

vidyate vaa arthaantaratvaat yamasya.

(*arthaantaratvaat*) In the event of an emergency like war, even if people are not able to follow the *yamas* and *niyamas* but continue to partake in pure food, there (*vidyate*) shall be visible or spiritual gains for them (*vaa*) because the deviation from the (*yamasya*) *yamas* and *niyamas* is for a greater cause.

### 10. asati chaabhaavaat.

Vaisheshika 6:2:10

asati cha abhaavaat.

In normal times, (*asati*) without following the *yamas*, purity of food (*abhaavaat*) is not possible, (*cha*) and hence without them there can be no spiritual gains.

In the eleventh, twelfth, thirteenth and fourteenth sootras the sage discusses the origins of attachment.

### 11. sukhaad raagah.

Vaisheshika 6:2:11

sukhaat raagah.

(*sukhaat*) Pleasure creates (*raagah*) attachment to means that enable pleasure. Similarly pain creates hatred towards its means as well.

### 12. tanmayatvaachcha.

Vaisheshika 6:2:12

tanmayatvaat cha.

Repeated exposure to pleasure and sorrows intensify the reaction towards them. (*cha*) And this (*tanmayatvaat*) intensity increases the longing or hatred for their means as well.

### 13. adrishhtaachcha.

Vaisheshika 6:2:13

adrishtaat cha.

(*cha*) And even (*adrishtaat*) the experiences from prior life cycles result in longing or hatred towards various beings and things.

### 14. jaativisheṣhaachcha.

Vaisheshika 6:2:14

jaativisheṣhaat cha.

(च) और (जातिविशेषात्) भिन्न योनियों के भी अलग अलग राग द्वेष होते हैं, मनुष्यों के अलग, पशुओं के अलग ।

पन्द्रहवे और सोलहवे सूत्रों में महर्षि धर्म अधर्म के कारणों और परिणामों पर विचार करते हैं ।

**इच्छाद्वेषपूर्विका धर्माधर्मप्रवृत्तिः ॥१५॥**

वैशेषिक ६:२:१५

इच्छाद्वेषपूर्विका । धर्माधर्मप्रवृत्तिः ॥१५॥

(इच्छाद्वेषपूर्विका) इन राग और द्वेष के कारण ही मनुष्यों की (धर्माधर्मप्रवृत्तिः) धर्म अथवा अधर्म में रुचि होती है ।

**तत्संयोगो विभागः ॥१६॥**

वैशेषिक ६:२:१६

तत् । संयोगः । विभागः ॥१६॥

(तत्) धर्म अधर्म के फल भोगने के लिए ही (संयोगः) आत्मा का शरीर के साथ संयोग अर्थात् जीव के रूप में जन्म और फिर (विभागः) मृत्यु होती है । यह चक्र मोक्ष मिलने अथवा प्रलय होने तक निरन्तर चलता रहता है ।

सत्रहवे सूत्र में महर्षि मोक्ष का मार्ग सुझाते हैं ।

**आत्मकर्मसु मोक्षो व्याख्यातः ॥१७॥**

वैशेषिक ६:२:१७

आत्मकर्मसु । मोक्षः । व्याख्यातः ॥१७॥

सन्ध्या, यज्ञ, यम, नियम आदि (आत्मकर्मसु) आत्मा का ज्ञान कराने वाले कर्मों को (मोक्षः) मोक्ष प्राप्ति का साधन (व्याख्यातः) समझना चाहिए ।

द्वितीय आह्निक समाप्त हुआ ।



## Vaisheshika Darshana - Chapter 6

(cha) And (jaativisheshaat) different types of animals have different longings and hatred based on their natural instincts.

In the fifteenth and sixteenth sootras the sage discusses the origins and consequences of righteous and unrighteous conducts.

**15. ichchhaadveṣhapoorvikaa dharmaadharmapravṛtṭiḥ.** Vaisheshika 6:2:15  
ichchhaa-dveṣha-poorvikaa dharma-adharma-pravṛtṭiḥ.

And these (poorvikaa) pre-existing feelings of (ichchhaa) longing and (dveṣha) hatred cause humans to gravitate towards (dharma) righteous or (adharma) unrighteous (pravṛtṭiḥ) tendencies.

**16. tatsaṅyogo vibhaagaḥ.** Vaisheshika 6:2:16  
tat saṅyogaḥ vibhaagaḥ.

(tat) In order to reap the rewards of righteous conducts and to suffer the consequences of unrighteous conducts, the soul (saṅyogaḥ) comes in contact with a physical body, starts a new life and finally (vibhaagaḥ) dies. This cycle of birth and death continues till either the soul attains *mokṣha* or the creation is dissolved by God.

In the seventeenth sootra the sage discusses the pathway towards *mokṣha*.

**17. aatmakarmasu mokṣho vyaakhyaataḥ.** Vaisheshika 6:2:17  
aatma-karmasu mokṣhaḥ vyaakhyaataḥ.

(karmasu) Various actions like meditation, *yajña*, following *yamas* and *niyamas* helps (aatma) the soul to connect with the Supreme. These actions (vyaakhyaataḥ) should be considered as the means (mokṣhaḥ) for attaining *mokṣha*.

Here ends the second aahnika.